Ministry of Culture
Government of India

कला वस्मिन् प्रतिष्ठिता
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

Adi Drishya: A Primeval Vision of Man
आदि दृश्य विभाग

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

# आदि दृश्य विभाग का स्थापना दिवस
# 8वां डॉ. वी. एस. वाकणकर स्मृति व्याख्यान श्रृंखला

## आदि दृश्य विभाग का स्थापना दिवस

## 8वां डॉ. वी. एस. वाकणकर स्मृति व्याख्यान श्रृंखला

मानव जीवन के विकास क्रम का इतिहास लगभग 36 लाख वर्ष पुराना है, अपने प्रारम्भिक चरणों में मानव यायावर जीवन यापन कर रहा था। साथ ही उसनें प्रस्तर के अनेक प्रकार के उपकरणों को आत्मरक्षा एवं शिकार के लिए बनाया। यह उपकरण ही पुरातत्त्व में मानव संस्कृति के आरम्भिक चरण, प्रागैतिहासिक काल, को व्याख्यायित करनें के प्रमुख साधन बने। कालांतर में लगभग 40 हजार वर्ष पूर्व शैलकला का जन्म मानव द्वारा किया गया। यह वो युग था जिसमे पर्यावरण में बदलाव के बीच मानव जंगली बर्बर जीवन से कलात्मकता और स्थिरता की ओर शनैः शनैः अग्रसर था। लेखन परंपरा की अनुपस्थिति के बाद भी, मानव ने अपनी दिनचर्या, विचार, अपनी योजनाओं एवं कई प्राकृतिक घटनाओं को चट्टानों, गुफाओं आदि माध्यमों पर चित्रित करना शुरू किया। आज यह अवशेष शैलकला के रूप में उपस्थित है, जिसे संजोने का कार्य आदि दृश्य विभाग द्वारा निरंतर किया जा रहा है।

दीप प्रज्जवलन – श्री राम बहादुर राय जी (ऊपर) एवं डॉ. रमाकर पंत (नीचे)

इसी क्रम में आदि दृश्य विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष 3 अप्रैल को विभाग के स्थापना दिवस पर भारतीय शैलचित्र कला अध्ययन के पितामह पद्श्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर की स्मृति में व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। इसी श्रृंखला क्रम में 3 अप्रैल, 2024 को अष्टम् डॉ. वी. एस. वाकणकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन केन्द्र के उमंग सभागार में किया गया। स्मृति व्याख्यान के वक्ता डॉ. चन्द्रमोहन नौटियाल (पूर्व वैज्ञानिक– प्रभारी– रेडिओकार्बन प्रयोगशाला, बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान, लखनऊ) थे जिनका व्याख्यान ''रॉक आर्ट स्टडीस् :सांइस मीट्स आर्ट'' विषय पर था। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री रामबहादुर राय जी (अध्यक्ष इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र), कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. पी. सी. जोशी (भूतपूर्व कार्यवाहक कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय), मुख्य अतिथि डॉ. बी. एम. पाण्डे (पूर्व निर्देशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली) के साथ ही आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत की भी गरिमामय उपस्थिति रही।

**प्रदर्शनी**

कार्यक्रम के प्रारम्भिक क्रम में फरीदाबाद एवं ग्वालियर के शैलचित्रों पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री रामबहादुर राय जी के कर कमलों से हुआ। विभाग द्वारा वर्ष 2021 एवं 2022 में फरीदाबाद के सर्वेक्षण का कार्य किया गया था। उक्त सर्वेक्षण में मांगर बनी, कोटगाँव, सिलाखड़ी, धौज गाँव के आस–पास के पहाड़ी से 3 चित्रित शैलाश्रय एवं 40 से अधिक स्थानों से शैलोत्कीर्णन के प्रमाण प्राप्त हुए। सर्वेक्षण में निम्नपुरापाषाण काल एवं मध्यपुरापाषाण काल के पाषाण उपकरण जिसमें हैण्डएक्स, क्लीवर, कोर, फ्लेक आदि की भी प्राप्ति फरीदाबाद के इस पर्वतीय क्षेत्रों से होती है। इसके साथ ही विभाग द्वारा वर्ष 2023 में ग्वालियर (मध्यप्रदेश) के मिर्चा ग्राम के आस–पास की पहाड़ी का सर्वेक्षण किया गया था। सर्वेक्षण से कुल 6 शैलाश्रय प्रकाश में आए जिनमें 4 चित्रित शैलाश्रय रहे, अन्य 2 का प्रयोग प्रागैतिहासिक मानव द्वारा आवास मात्र के लिए किया गया प्रतीत होता है। शैलाश्रय क्रमांक 1 एवं 2 से मध्यपाषाण कालीन शैलचित्र प्राप्त हुए है। उक्त दोनों सर्वेक्षण से प्राप्त शैलकला एवं पुरातात्त्विक प्रमाणों के आधार पर इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी अवलोकन के दौरान मो. जाकिर खान (परियोजना सहायक, आदि दृश्य विभाग) द्वारा प्रदर्शनी के विषय पर विस्तृत विवरण अतिथिय के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

प्रदर्शनी का अवलोकन करते श्री राम बहादुर राय, विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत एवं अन्य अधिकारीगण व अतिथिगण

प्रदर्शनी अवलोकन के पश्चात् उंमग सभागार में व्याख्यान कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पी. सी. जोशी, कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. बृज मोहन पाण्डे, एवं मुख्य वक्ता डॉ. सी. एम. नौटियाल का अंग वस्त्र से सम्मान किया गया। इसके उपरांत डॉ. पंत ने उद्‌बोधन में आदि दृश्य विभाग के द्वारा किये जा रहे कार्यों का उल्लेख किया गया जिसमें सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण, विभिन्न राज्यों के पुरातत्त्व विभागों से किये जा रहे समझौता ज्ञापन एवं छत्तीसगढ़ में स्थाई शैलकला दीर्घा, रॉक आर्ट हेरिटेज पार्क लद्‌दाख जैसे कार्यो के विषय में सभी को अवगत कराया। साथ ही डॉ. पंत ने विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से सभा को अवगत कराया जो भारत के समृद्ध शैलकला को समर्पित है। डॉ. पंत ने कालक्रम में विभाग के संख्यात्मक एवं गुणात्मक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए बताया कि वर्ष 1988 से 2012 के बीच विभाग द्वारा कुल 6 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया वही वर्ष 2012 से 2022 के मध्य कुल 21 पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। अप्रैल 2022 से अप्रैल 2024 के मध्य विभाग द्वारा कुल 11 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।

विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत द्वारा उद्‌बोधन

**पुस्तक विमोचन**

आदि दृश्य विभाग की परंपरा अनुसार कार्यक्रम को अग्रसर करते हुए इस वर्ष पाँच पुस्तकों का विमोचन किया गया। विमोचित पुस्तकों के नाम अग्रलिखित है–

1. 8वां डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर व्याख्यान माला की स्मृति श्रृंखला।
2. राक॔ आर्ट ऑफ साऊथ इंडिया वीद स्पेशल रिफरेंस टू केरला।
3. रायगढ़ जनपद की शैलकलाः एक परिचय।
4. राक॔ आर्ट ऑफ वॉयनाडः एन इनट्रोडक्शन।
5. फरीदाबाद जनपद की शैलकलाः एक परिचय।

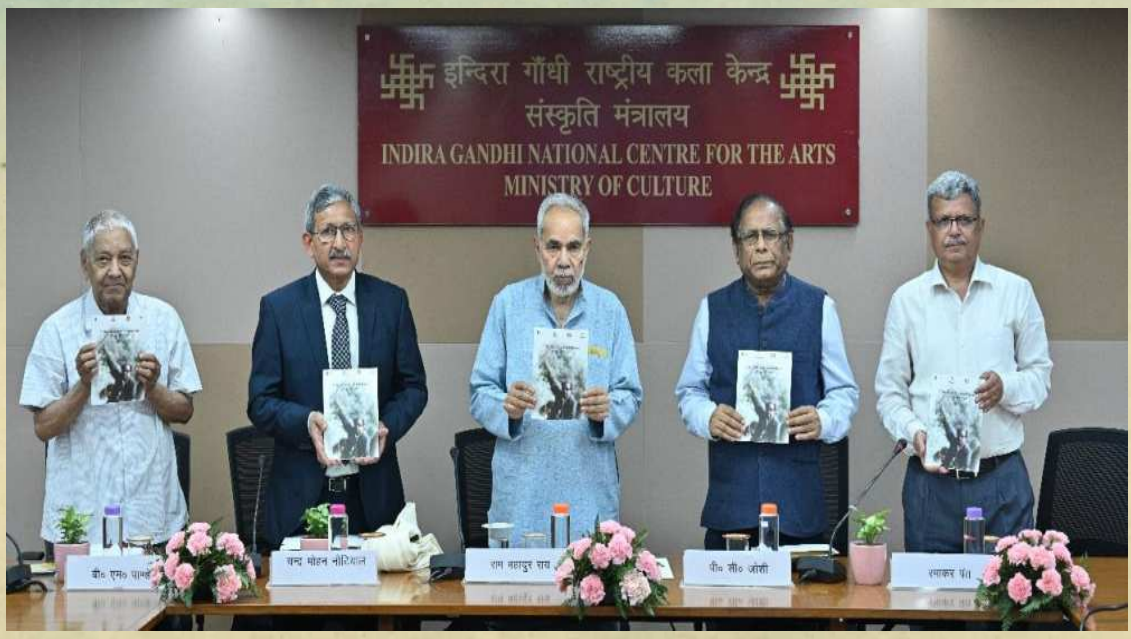


विभागीय प्रकाशन का विमोचन करते हुए बाएं से क्रमशः डॉ. बृज मोहन पाण्डे, डॉ. सी. एम. नौटियाल, श्री राम बहादुर राय, प्रो. पी. सी. जोशी, डॉ. रमाकर पंत

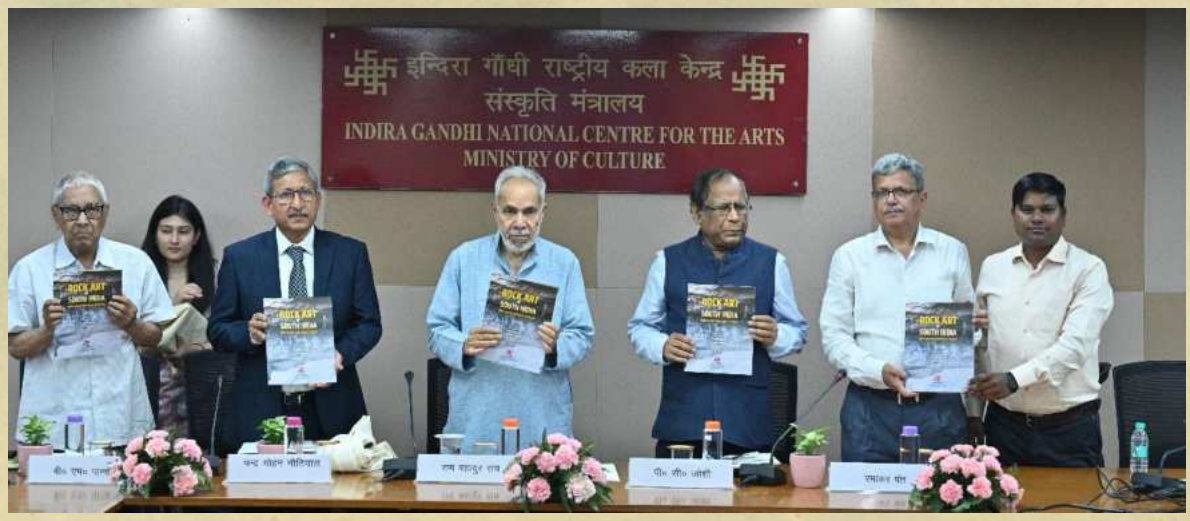


विभागीय प्रकाशन का विमोचन करते हुए बाएं से क्रमशः डॉ. बृज मोहन पाण्डे, डॉ. सी. एम. नौटियाल, श्री राम बहादुर राय, प्रो. पी. सी. जोशी, डॉ. रमाकर पंत, डॉ. दिलीप कुमार संत

## वृत्तचित्र विमोचन

कार्यक्रम की अगली कड़ी में लद्दाख व केरला पर विभाग द्वारा किये गये सर्वेक्षण व अभिलेखीकरण पर आधारित वृत्तचित्र (डाक्युमेन्ट्री) को रिलीज किया गया जो वर्तमान में केन्द्र के यू–ट्यूब चेनल पर उपलब्ध है। आदि दृश्य विभाग द्वारा स्कूली छात्र–छात्राओं में शैलकला विषय को लेकर जागरूक करने को लक्ष्य मानकर डॉ. वी. एस. वाकणकर की

लद्दाख पर निर्मित डाक्युमेन्ट्री का प्रर्दशन

भीमबेठका खोज पर एनीमेशन टीजर, एनीमेटर ओपल महेश्वरी द्वारा विभागाध्यक्ष के निर्देशन में रिलीज किया गया।

डॉ. वी. एस. वाकणकर जी की भीमबेठका खोज पर विभाग द्वारा बनाई एनीमेंशन का एक दृश्य

## स्मृति व्याख्यान

डॉ. वाकणकर पुरातत्त्वेत्ता और शैलकला विशेषज्ञ के साथ–साथ समाज सेवक भी थे। डॉ. वाकणकर द्वारा सन् 1957 में भीमबेटका शैलाश्रयों की उनकी खोज ने उन्हे विश्व भर में ख्याति दिलाई, उनकी स्मृति मे प्रारंभ किए गए व्याख्यानमाला का अष्टम व्याख्यान डॉ. सी. एम. नौटियल द्वारा व्याख्यान ''रॉक आर्ट स्टडीज्: सांइस मीट्स आर्ट'' विषय पर प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान में डॉ. नौटियाल ने शैलकला के वैज्ञानिक तिथि निर्धारण संबधित तथ्यों से सभी को अवगत कराया। वर्तमान में भारत वर्ष

डॉ. सी. एम. नौटियाल व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए एंव सभागार में उपस्थित अधिकारीगण व विधार्थिगण

में किस तरह का वैज्ञानिक तिथि निर्धारण प्रक्रिया है एवं देश के विभिन्न लैब जैसे भारतीय प्रौघोगिकी संस्थान हैदराबाद, बीरबल सहानी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ, भौतिक अनुंसधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद का उल्लेख किया गया। शैलकला विषय में किस प्रकार चित्रों को बनाने में हेमेटाइट जैसे खनिज तत्वों का प्रयोग किया गया। उक्त खनिज पदार्थ को प्रयोगशाला में टेस्ट हेतु कैसे संजोया जाए एवं इसके वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर भी शैलकला के वैज्ञानिक तिथियों पर कार्य किया जाना संभव है इस विषय पर डॉ. नौटियाल के व्याख्यान में स्पष्ट किया गया। डॉ. नौटियाल का व्याख्यान विज्ञान एवं कला के परस्पर संबंधो पर आधारित रहा।

डॉ. सी. एम. नौटियाल व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए

व्याख्यान की अध्यक्षता डॉ. बी. एम. पाण्डे द्वारा किया गया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. पाण्डे ने आदि दृश्य विभाग को शैलकला पर किये जा रहे शोध परक कार्यों की प्रंशसां की। डॉ. नौटियाल के व्याख्यान की सराहना करते हुए डॉ. पाण्डे ने वैज्ञानिक तकनीको का प्रयोग शैलकला विषय में करने की सलाह विभाग एवं शोधार्थियों को दी। इसके पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पी. सी. जोशी ने भी इस सफल कार्यक्रम आयोजन हेतु आदि दृश्य विभाग को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन कु. शिमोन प्रकाश (परियोजना सहायक, आदि दृश्य विभाग) ने किया जिसमें धन्यवाद ज्ञापन आदि दृश्य विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार संत द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष एवं अधिकारी गण एवं विद्यार्थीयों के साथ–साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों एवं एमेटी इंटरनेशनल स्कूल के प्राध्यापक एवं छात्र उपस्थित रहे।

शिमोन प्रकाश
परियोजना सहायक
आदि दृश्य विभाग